दि जैन पत्रना ग्राहको

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

बाळबोध जैन धर्म

भाग १ लो तथा बीजो.

अनुवादक अने प्रकाशक—

मूलचंद किसनदास कापडिया—सुरत.

छाणी (वडोदरा) निवासी शा. सुरचंद मनोरदास

तरफथी पोतानी स्वर्ग० सौ० पत्नी सोनाना स्मरणार्थ

'दिगंबर जैन' पत्रना ग्राहकोने आठमा वर्षनी

आठमी भेट.

आवृत्ति पहेली वीर सं. २४४२ प्रत २७००

किं. रु. ०-१-०

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

बाळबोध जैन धर्म

भाग १ लो तथा बीजो.

कर्ता-

बाबू दयाचद्र गोयलीय जैन बी. ए.

अनुवादक अने प्रकाशक

मूळचद कसनदास कापडिया-सूरत

आवृत्ति पहेली वीर स २४४२ प्रत २७००

कि रु. ०-१-०

—Printed by—
Moolchand Kasandas Kapadia at his '*Jain Vijaya*'
Printing Press near Khapatia Chakla Laxmi-
narayan's Wadi—SURAT

—Published by—
Moolchand Kasandas Kapadia.
from Khapatia Chakla Chandawadi—SURAT

शिक्षकोने सूचना.

ए तो जाणीतुंज छे के बाळकोनुं हृदय घणुंज कोमळ होय छे जेथी जे वात न्हानपणमां छोकरांओनां हृदयमां उतारी देवाय छे तेने तेओ जींदगी सुधी भूलता नथी, ए माटे धर्मनुं शिक्षण आपवामां घणीज काळजी राखवी जोइए अने न्हानपणथीज तेओने दरेक विषय सारी रीते समजाववो जोइए अने ए माटे सौथी सारो रस्तो एज छे के चोपडीमांथी उदाहरणो वडे मोढे शिक्षण आपवुं के जेथी साधारण रीते बाळको समजी जशे अने तेमनुं मन पण लागशे

पहेला भागमांना जीव, अजीव, त्रस अने स्थावरना भेदो छबीओ तथा चित्रोद्वारा अथवा बीजी वस्तुओथी समजाववा तेमज बीजा भागमांना अघरा विषयोने सहेला शब्दोमां एवी रीते लखवानो प्रयास कर्यो छे के जेथी नानी उमरना बाळकोने रमतगमत करतां दरेक बाबत समजवामां आवी जाय अने तेमने ते जराए अघरी लागे नहि के जेथी मोटा थया पछी धर्मना मूळ विषयोने स्वभाविक रीते समजी जाय

बीजा भागमां ७ पाठ छे तेमांथी पहेलाना बे पाठोने तो स्तुतिनी माफक दररोज पाठशाळानी शरुआतमां अने

रजानी वखते विद्यार्थीओने एक साथे बोलाववा अने त्रीजा तथा चोथा पाठने जानवरो तथा झाडोनां चित्रो अथवा रमकडां के कोई बागबगीचामां लइ जईने प्रत्यक्ष झाड वगेरे बतावीने शीखववा तथा बाकीना त्रण पाठोने नानी नानी वार्ताओना दाखला आपीने शीखववा अने दरेक पाठ पुरो थवा पछी तेनी अंतमां आपेला प्रश्नो तथा एवाज बीजा मोढाना प्रश्नो बाळकोनें पूछवा अने समजाववा कोईपण वातने मात्र मोंढे कराववानो प्रयत्न न करवो केमके एवी रीते गोखणपट्टी कराववाथी बाळकोनी वधवा मांडती विचारशक्ति घटे छे माटे जे कंई शीखवो ते एवी रीते समजावो के बालकोने ते पाठशाळामांज याद थई जाय. आ मुजब शीखववाथीज विद्यार्थीओ भविष्यमां विद्वान थइ शके छे अनें शिक्षकोनी पण प्रशंसा थाय छे.

वीर स २४४२
कार्तिक शुक्ल १३
ता १९-११-१५

निवेदक—

मूलचंद कसनदास कापडिया
सुरत.

। श्रीवीतरागाय नमः ।

बाळबोध जैनधर्म भाग पहेलो।

पाठ पहेलो।

णमोकार मंत्र।

गाथा ।

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरीयाणं ।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं ॥ १ ॥

णमोकार मंत्रनो महिमा ।

एसो पंच णमोयारो[1] सव्वपावप्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं होइ मंगलं ॥२

सवालो-

१ णमोकार मत्र शुद्ध बोलो.

२ आ मत्रनो महिमा शु छे ?

३ आ मत्रमा केटला अक्षर छे ?

४ आ मत्रमा कोने कोने नमस्कार कर्या छे ?

---

१ णमुक्कारो तथा णमोक्कारो पण पाठ छे

पांच परमेष्ठीनां नाम—अर्हत, सिद्ध आचार्य, उपाध्याय अने सर्वसाधु ए पाचने णमोकार मत्रमा नमस्कार करायला छे.

पाठ बीजो ।

वर्तमान चोवीस तीर्थंकरोनां नाम.

१. ऋषभनाथजी, २. अजितनाथजी, ३ संभवनाथजी, ४. अभिनन्दननाथजी, ५. सुमतिनाथजी, ६. पद्मप्रभनाथजी, ७. सुपार्श्वनाथजी, ८ चंद्रप्रभनाथजी, ९. पुष्पदन्तनाथजी, १० शीतलनाथजी, ११. श्रेयांसनाथजी. १२. वासुपूज्य-नाथजी. १३. विमलनाथजी, १४. अनन्तनाथजी, १५. धर्मनाथजी, १६. शांतिनाथजी, १७ कुन्थुनाथजी, १८. अर-नाथजी, १९ मल्लिनाथजी, २० मुनिसुव्रतनाथजी, २१. नमिनाथजी, २२ नेमिनाथजी, २३ पार्श्वनाथजी, २४. महावीरनाथजी

आमाथी ऋषभने आदिनाथ, पुष्पदतने सुविधिनाथ अने महावीरने श्रीवर्द्धमान, सन्मति अने वीर पण कहे छे.

सवालो—

१. पाचमा, दशमा, वीसमा अने चोवीसमा तीर्थंकरना नाम कहो ?

२. बधु मळीने तीर्थंकर केटला छे ? तथा पहेला अने छेल्ला तीर्थंकरनु नाम शु छे ते कहो ?

३ एवा कया कया तीर्थंकर छे के जेना नाम एकथी वधारे छे ?

४. सुविधिनाथ केटलामा तीर्थंकर छे? एनी पहेलाना तीर्थंकरोनां नाम कहो?

५. तीर्थंकर चोवीसज होय छे के वधारे ओछा पण होय छे?

पाठ त्रीजो।

जीव अने अजीव.

जीव-एने कहे छे के जेमां जीव होय, जे जीवतां होय अने जेमां जाणवा तथा जोवानी शक्ति होय जेमके-पुरुष (मरद), स्त्री (बायडी), घोडो, बळद, कीडी, मंकोडा वगेरे. भावार्थ-जगतमां आपणे जेटला पुरुष, स्त्री, पशु, पक्षी, कीडी, मंकोडा वगेरेने खाता, पीता, फरता, हरता देखीए छीए ते बधामां जीव छे.

अजीव-एने कहे छे के जेमां जीव होतो नथी, जेमके-सुकी माटी (मंटोडी), ईट, पथ्थर, लाकडुं, टेबल, खुरशी, कलम, कागळ, टोपी, रोटली, वाटी वगेरे.

जीवना भेद।

जीव बे प्रकारना होय छे एक मुक्त जीव अने बीजा संसारी जीव।

१ मुक्त जीव एने कहे छे के जे संसारथी मुक्त थई गया छे एटले जेनो मोक्ष थई गयो छे अने जेणे सदाने

माटे साचुं सुख प्राप्त करी लीधुं छे अने जे कदि पण संसारमां फरीथी आवता नथी ते.

२. संसारी जीव ते छे के जे संसारमां भ्रमण करी रहेला छे अने जन्ममरणनां दुःख सहन करी रहेला छे. संसारी जीव बे प्रकारना होय छे—१ त्रसजीव, २. स्थावरजीव.

त्रसजीव एने कहे छे के जे पोतानी इच्छाथी चालता, फरता होय, व्हीता होय, न्हाशता होय तथा खावानुं शोधता होय एटले—बेइन्द्रिय, त्रणइन्द्रिय, चारइन्द्रिय अने पंचेंद्रिय जीव। जेमके—इयळ, कीडी, मांखी, वांदा, घोडो, बळद, मनुष्य वगेरे

स्थावरजीव एटले एकेंद्रिय जीव एने कहे छे के जे उपजे छे, वधे छे अने मरे छे परंतु पोतानी मेळे हाली चाली शकता नथी जेमके—पृथ्वी, (जमीन), अप (पाणी), तेज (अग्नि), वायु (हवा), वनस्पति (झाड वगेरे)

सवालो—

१. झाड, ऊदर, पोपट, वाघ, समडी, हाथी, घोडो, जोडा, बकरी, रुपिया, पवन, दीवो, कागळ, केरी, पान, कान, गाडी, घोडी, साडी, दाढी, हाडकां, चामडां, वाळ, दाळ, शाल, अने तरवार आ बधामां जीव कोण छे अने अजीव कोण छे ?

२. त्रस अने स्थावरमां शु भेद छे ते उदाहरण आपीने बतावो.

३. त्रस जीव केटला अने कया कया छे ?

४. स्थावर जीव केटला प्रकारना अने कया कया छे ?

५. हाथी, पाणी, घोडो, हवा, कूतरो, बिलाडी, देवता (अग्नि) अने केरी आ जीवोमांथी त्रस कया छे अने स्थावर कया छे?

६. मुक्त जीव संसारमां आवे छे के नहीं? शुं तमे जेटला जीव जुओ छो ते बधा संसारी छे?

पाठ चोथो।

इंद्रिओ।

इन्द्रिय–एने कहे छे के जेनी मारफते जीव ओळखी शकाय ते इन्द्रियो पांच होय छे १ स्पर्शनइन्द्रिय अर्थात् त्वचा [चामडी] २ रसनाइन्द्रिय एटले जीभ ३ घ्राणइन्द्रिय एटले नाक. ४. चक्षुइन्द्रिय एटले आंख. ५. कर्णइन्द्रिय एटले कान.

स्पर्शनइन्द्रिय–एने कहे छे के जेने अडकवाथी हलकुं, भारी, लुखुं, चीकणुं, कोमळ, कठण, ठंडुं, गरम वगेरेनुं ज्ञान थाय. जेमके–देवताने अडकवाथी गरम अने पाणीने अडकवाथी ठंडुं मालम पडे छे वगेरे

रसनाइन्द्रिय–एने कहे छे के जेनाथी खाटो, मीठो, खारो, कडवो, तीखो, कषायलो [कटाणा] रसनुं [स्वादनुं] जे ज्ञान थाय ते. जेमके–पेंडो चाखवाथी मीठो, लींबडानां पांदडां कडवां, मरचां तीखां अने लींबु खाटा मालूम पडे छे.

घ्राणइन्द्रिय-एनें कहे छे के जेनाथी सुगंध (खुशबो) अनें दुर्गंध (बदबो) नुं ज्ञान थाय छे ते. जेमके गुलाब, केव डाना फूलोथी सुगंध अने ग्यासतेलना तेलथी दुर्गंध आवे छे.

चक्षुइन्द्रिय-एने कहे छे के जेनाथी काळो, पीळो, वादळी, लाल, अने सफेद रंगनुं तथा आ रंगोनी मेळवणीथी अनेक प्रकारना रंगोनुं ज्ञान थाय छे ते. जेमके दूध, दही, चादी सफेद छे, कोयला काळा छे अने लोही लाल छे. सोनुं पीळुं अने मोरनी पांख वादळी छे।

कर्णइन्द्रिय-एने कहे छे के जेनाथी आदमी, जानवर वगेरेनो अवाज जाणी शकाय छे ते.

सवालो--

१-इन्द्रियो केटली होय छे तेना नाम कहो ?

२-त्रीजी अने पाचमी इन्द्रियथीं शुं जाणी शकाय छे ?

३-सूघवु अने जोवु ए कई कई इन्द्रियनु काम छे ?

४-कीडीने आंख होती नथी त्यारे ते मीठाई वगेरेनी पासे केवी रीते चाली जाय छे ?

५-एक जानवरनी पासे बदूक फोडी त्यारे ते ऊडयुं नहीं, आनुं शु कारण छे ? एवु कयु जानवर छे ?

६-इन्द्रिय वगर जीव होई शके के नहीं ?

पाठ पंचमो।

पांच प्रकारना जीव।

एकेन्द्रियजीव—एने कहे छे के जेने मात्र एकज स्पर्शनइन्द्रिय होय छे जेमके—माटी, पाणी, अग्नि, पवन, फळ, फूल वगेरे.

बेइन्द्रियजीव—एने कहे छे के जेने स्पर्शन अने रसना आ बे इन्द्रिय होय. जेमके—इयळ, कीड़ां, भूंड, शंख, अळसिया, छीप वगेरे

त्रणइन्द्रिय जीव—एने कहे छे के जेने स्पर्शन, रसना अने घ्राण आ त्रण इन्द्रियो होय छे ते जेमके—कीडी, कीडा, मांकड, मंकोडा, जू वगेरे.

चारइन्द्रिय जीव—एने कहे छे के जेने स्पर्शन, रसना, घ्राण अने चक्षु आ चार इन्द्रियो होय छे ते. जेमके—भमरो, माखी, मच्छर, तीड, करोळीयो वगेरे.

पांचइन्द्रिय जीव—एने कहे छे के जेने पांचे इन्द्रियो होय छे ते जेमके—देव, नारकी, मनुष्य, पशु वगेरे

सवालो—

१. माखी, बळद, कूतरो, साप, कीडी, इयळ, छीप, हाथी, देवता अने पाणी-आ जीवोने कइ कइ इन्द्रियो होय छे

२. चार इन्द्रिय जीवोमा बे इन्द्रिय जीवोथी शुं वधारे छे?

३. जे जीवने आंख होय छे ते जीवने नाक होय छे के नहीं अने जे जीवने नाक होय छे तेने आंख होय छे के नहीं?

४. तमने कइ कइ इन्द्रियो छे? स्थावर जीवने कइ कइ इन्द्रियो होय छे?

५. एक माणस जन्मथी आंधळो उत्पन्न थयो होय छे तो कहो के तेने कइ कइ इन्द्रियो छे?

६. मूगा अने बहेरा मनुष्यमां शु फेर छे?

७. कइ इन्द्रिय तमोने वधारे काममां आवे छे अने कइ इन्द्रिय तमने वधारे गमे छे?

८. अमे एक एवो मनुष्य जोयो के जेने जीभ, आंख, नाक, कान कंई पण नहोतुं तो कहो के अमारु कहेवुं साचुं छे के नहीं?

९. ज्यारे मनुष्यने पाचे इन्द्रिय होय छे तो बहेरा, मूंगाने माणस कहेवो जोइए के नहीं?

१०. त्रण इन्द्रिय जीव थवु सारु छे के चार इन्द्रिय जीव?

समाप्त.

|| ॐ नमः सिद्धेभ्यः ||

बालबोध जैनधर्म भाग तीजो।

पाठ पहला।

दौलतरामजीकृत स्तुति।

दोहा।

सकल ज्ञेयज्ञायक तदपि, निजानंद रसलीन।
सो जिनेन्द्र जयवंत नित, अरि[1] रज[2] रहस[3] विहीन ॥१॥

पद्धरिछन्द।

जय वीतराग विज्ञानपूर। जय मोहतिमिरको हरनसूर।
जय ज्ञान अनंतानंत धार। दृगसुखवीरज[4] मंडित अपार ॥२॥
जय परमशांतमुद्रासमेत। भविजनको निज अनुभूति हेत।
भवि भागनवश जोगेवशाय। तुम धुनि ह्वै सुनि विभ्रम नशाय ॥३॥
तुम गुण चिंतत निजपर विवेक। प्रगटै, विघटै आपद अनेक॥
तुम जगभूषण दूषणवियुक्त। सब महिमायुक्त विकल्पमुक्त ॥४॥
अविरुद्धशुद्धचेतनस्वरूप। परमात्म परम पावन अनूप॥

१ मोहनीयकर्म। २ ज्ञानावरणीय तथा दर्शनावरणीयकर्म। ३ अंतरायकर्म। ४ अनंतदर्शन, अनंतसुख, अनंतवीर्य।

शुभअशुभविभाव अभावकीन। स्वभाविक परिणातिमय अछीन॥५॥
अष्टादशदोषविमुक्त धीर[1]। स्वचतुष्टयमय[2] राजत गभीर॥
मुनि गणधरादि सेवत महंत। नव केवललब्धिरमा धरंत॥६॥
तुम शासनसेय अमेय जीव। शिव[3] गये जाहिं[4] जैहैं[5] सदीव॥
भवसागर में दुख छारवारि। तारनको और न आप टारि॥७॥
यह लखि निज दुखगद[6]हरण काज। तुम ही निमित्त कारण इलाज॥
जाने, तातै, मैं शरण आय। उचरों निज दुख जो चिर लहाय॥८॥
मैं भ्रम्यो अपनपो विसरि आप। अपनाये विधिफल पुण्य पाप॥
निजको परको करता पिछान। परमें अनिष्टता इष्ट ठान॥९॥
आकुलित भयो अज्ञान धारि। ज्यो मृग मृगतृष्णा जानि वारि॥
तनपरणतिमें आपो चितार। कबहूँ न अनुभवो स्वपदसार॥१०॥
तुमको विन जाने जो कलेश। पाये सो तुम जानत जिनेश॥
पशुनारकनरसुरगतिमझार। भव धरि धरि मर्यो अनंत वार॥११॥
अब काललब्धिबलतै दयाल। तुम दरशन पाय भयो खुशाल॥
मन शांत भयो मिट सकल द्वंद। चाख्यो स्वातम रस दुखनिकंद॥१२॥
तातैं अब ऐसी करहु नाथ। बिछुरै न कभी तुअ चरण साथ॥
तुम गुणगणको नहिं छेव[7] देव!। जगतारनको तुअ विरद एव॥१३॥
आतम के अहित विषय कषाय। इनमें मेरी परिणाति न जाय॥
मै रहूं आपमें आप लीन। सो करो होहुं ज्यों निजाधीन॥१४॥

---

१ अढार दोष रहित। २ अनत ज्ञान, अनत दर्शन, अनत सुख, अनत वीर्य। ३ मोक्ष। ४ जाय छे। ५ जशे। ६ रोग। ७ अत।

मेरे न चाह कुछ और ईश । रत्नत्रय[1] निधि दीजे मुनीश ॥
मुझ कारजके कारण सु आप । शिव करहु हरहु मम मोहताप ॥१५॥
शशि[2] शांति करन तपहरण हेत । स्वयमेव तथा तुम कुशल देत ॥
पीवत पियूष[3] ज्यों रोग जाय । त्यों तुम अनुभव तै भव नसाय ॥१६॥
त्रिभुवन तिहुंकालमँझार कोय । नहिं तुम विन निजसुखदाय होय॥
मो उर यह निश्चय भयो आज । दुखजलधि उतारन तुम जिहाज॥१७॥

दोहा.

तुम गुणगणमणि गणपती, गणत न पावहिं पार ।
'दौल' स्वल्पमति किम कहै, नमूं त्रियोग[4] सँभार ॥१८॥

सवालो ।

१—आ स्तुति कोणे बनावी छे ?

२—पहेली अने छेल्ली ए बे कडी शुद्ध कहो ?

३—'आतमके अहित विषय कषाय' अहींथी छेल्ले सुधी भणो.

४—पहेलेथी 'स्वाभाविक परिणतिमय अछीन' सुधी भणो.

५—आ स्तुतिमां जे कडी तमने वधारे गमे ते भणो.

६—आ स्तुतिनो भावार्थ गुजराती भाषामां लखो.

७—स्तुति कोने कहे छे अने ए भणवाथी शुं लाभ छे ?

---

१ सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र । २ चन्द्रमा । ३ अमृत । ४ मनयोग, वचनयोग, काययोग ।

पाठ बीजो.

भूधरदासजी कृत बारह भवना।

दोहा.

राजा राणा छत्रपति, हाथिनके असवार।
मरना सबको एक दिन, अपनी अपनी बार॥ १॥
दलबल[1] देई देवता, मात पिता परिवार।
मरती बिरियां[2] जीवको, कोई न राखनहार॥ २॥
दामविना निरधन दुःखी, तृष्णावश धनवान।
कहूं न सुख संसारमें, सब जग देख्यो छान॥ ३॥
आप अकेला अवतरै[3], मरै अकेला होय।
यों कबहूं या जीवको, साथी सगा न कोय॥ ४॥
जहां देह अपनी नही, तहां न अपना कोय।
घर संपति[4] पर प्रगट ये, पर हैं परिजनलोय[5]॥ ५॥
दिपै[6] चाम चादर[7] मढी, हाड़ पींजरा देह[8]।
भीतर या सम जगतमे, और नहीं घिनगेह॥ ६॥

सोरठा।

मोहनींदके ज़ोर, जगवासी घूमै सदा।

---

१ नोकर चाकर सेना वगेरे। २ मरती वखते। ३ जन्म ले छे। ४ धन वगेरे। ५ कुटुंबना लोको। ६ चमके छे। ७ बराबर। ८ दुर्गंधवाळु।

कर्म चोर चहुँ ओर, सरबस[१] लूटै सुधि नही ॥७॥
सतगुरु देय जगाय, मोह नींद जब उपशमै[२] ।
तब कुछ बनै उपाय, कर्म चोर आवत रुकें ॥८॥

दोहा ।

ज्ञानदीप[३] तप तेलभर, घर शोधै[४] भ्रम छोर ।
याविध विन निकसै नही, पैठे पूरव[५] चोर ॥९॥
पंचमहाव्रत संचरन[६], समिति पंचपरकार ।
प्रबल पंच इंद्रियविजय[७], धार निर्जरा सार ॥१०॥
चौदह राजु[८] उतंग[९] नभ[१०], लोक पुरुषसंठान[११] ।
तामें जीव अनादितै, भरमत है विन ज्ञान ॥११॥
जाचे सुरतरु[१२] देय सुख, चितत चितारैन[१३] ।
विन जाचे विन चितये, धर्म सकल सुखदैन[१४] ॥१२॥
धन कन[१५] कंचन[१६] राजसुख, सबहि सुलभ[१७]कर जान ।
दुर्लभ है संसारमें, एक जथारथ[१८] ज्ञान ॥१३॥

इति बारह भावना ।

---

१ बधु । २ दबाई जाय । ३ ज्ञानरूपी दीवो । ४ टूटे अर्थात् खोळे । ५ पहेला बाधेला कर्म । ६ पाळवा । ७ इन्द्रियोने वश करवी । ८ एक प्रकारनु माप । ९ ऊंचु । १० आकाशमां । ११ मनुष्यना आकारनो । १२ कल्पवृक्ष । १३ चिंतामणि रत्न । १४ सुख देनार । १५ अनाज । १६ सोनु । १७ सहेलु । १८ साचु ।

सवालो ।

१—आ कविता कोणे बनावी छे ?

२—आ कवितामां कयी बाबतनुं वर्णन छे ?

३—बार भावनानां नाम कहो ?

४—आ भावनामां जे बे सोरठा छे ते कहो ?

५—सौथी पहेली अने सौथी छेल्ली भावनाना दोहरा कहो ?

६—उपशम, महाव्रत, इंद्रिय, राजु, अनादि, लोक, सुरतरु एथी शु समजो छो ?

पाठ त्रीजो.

द्रव्यचर्चा. (पहेला भागथी आगळ)

त्रसजीवोना भेद.

त्रसजीव—चार प्रकारना होय छे; १ बेइन्द्रिय जीव; २ त्रणइन्द्रिय जीव; ३ चारइन्द्रिय जीव; अने ४ पांचइन्द्रिय जीव।

नोट—बेइन्द्रिय जीव; त्रणइंद्रिय जीव अने चारइन्द्रिय जीव आ जीवोने विकलत्रय कहे छे.

पंचेन्द्रिय जीवोमांथी तिर्यंच पंचेन्द्रिय जीव त्रण प्रकारना होय छे—

१. जलचर जीव; २ थलचर जीव; ३ नभचर जीव.

१-जलचर जीव-एने कहे छे के जे पाणीमांज रहे छे, जेमके-मांछलां, मगरमच्छ, अजगर, शंख वगेरे.

२-थलचर जीव-एने कहे छे के जे पृथ्वी (जमीन) उपर हालेचाले छे जेमके-गाय, भेंस, कूतरो, बिलाडी वगेरे.

३-नभचर जीव-एने कहे छे के जे आकाशमां ऊड्या करे छे, जेमके-कागडा, कबूतर, पोपट, चल्ली वगेरे.

बधा पंचेन्द्रिय जीवो सैनी असैनीना भेदथी बब्बे प्रकारना होय छे, १. सैनी (संज्ञी), २ असैनी (असंज्ञी).

सैनीजीव-एने कहे छे के जेने मन होय एटले जेने सारा खोटानी समजण पडती होय ने जेवांके-गाय, बळद, पोपट वगेरे पशु तथा माणस, देव अने नारकी

[१]असैनीजिव-एने कहे छे के जेने मन न होय, एटले जे केळवणी अने उपदेश लइ न शके एवा जीवो घणुंखरूं मातापिताना रज अने वीर्यना मळवाथी पेदा थता नथी, पण मांहोमांहे एक बीजाने मळवाथीज पेदा थाय छे. पाणीमां रहेवावाळा साप घणुं करीने असैनी होय छे. कोइ कोइ पोपट पण असैनी होय छे.

सवालो।

१-नीचे लखेला जीवोमाथी कया कया विकलत्रय[त्रस] छे?

हाथी, घोडो, कीडी, मकोडो, माखी, भमरो.

१ एकेंद्रिय, बेइंद्रिय, त्रणइंद्रिय अने चारइंद्रिय जीव तो नियमथीज असैनी होय छे.

३–शुं बधा पंचेन्द्रिय जीव सैनी होय छे ? अने शुं बधा सैनी जीव पचेन्द्रिय होय छे ?

२–सैनीअसैनीमां शु फेर छे अने तेमाथी तमे कोण छो ?

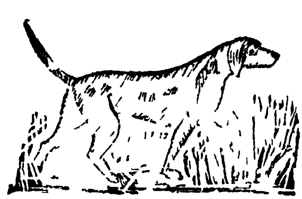
४–सैनी जीवने वधुमां वधु केटली इंद्रिय होय छे अने ओछामां ओछी केटली ? जे जीवने आंख होती नथी तेमा अने सैनी जीवमा शुं तफावत छे ?

५–नीचे लखेला जीवोमा जलचर जीवो कया कया छे ? हस, कूतरो, मरधी, मांछली, कौवो, देडको, बगलुं.

६–शु आकाशमां मात्र तीर्यंच पर्चेद्रिय जीवज ऊडी शके छे अने शु ऊडवानी शक्तिवाळा सर्वे जीवो नभचर कहेवाय छे ?

७–लावरी पक्षी आकाशमा बहुज ऊचु उडे छे अने जमीन उपर पोतानो माळो बनावे छे तो ते थलचर छे के नभचर?

८–एक बागमा आबाना त्रण झाड उपर चार कोयलो मीठी मीठी वाणी बोली रहेली छे अने तेनी पासेज गुलाबना चार छोडवा उपर ७ भमरा गुजारव करी रहेला छे तो बतावो के त्या असैनी जीव केटला छे ?



पाठ चोथो।

स्थावर जीवोना भेद.

स्थावर जीव के जेने एक स्पर्शन (अडकवानी) इन्द्रियज होय छे ते *पांच प्रकारना होय छे.

१–पृथ्वीकायना जीव–एटले पृथ्वी (जमीन)ज जेनुं शरीर होय ते. जेमके–माटी, पथ्थर, अभ्रख, रत्न, सोनुं, चांदी वगेरे खाणमांथी निकळनारी धातुओ; परंतु उत्पन्न थवानी जगा अर्थात् खाणमांथी छूटा पड्या पछी घणुं करीने तेमां जीव रहेता नथी.

२–जळकायना जीव–एटले जळ (पाणी)ज जेनुं शरीर होय ते. जेमके–पाणी, ओळा (करां), बरफ, ओस वगेरे.

३–अग्निकायना जीव–एटले अग्नि (देवता)ज जेनुं शरीर होय ते. जेमके दीवानी जोत, वीजळी, देवता वगेरे

४–वायुकायना जीव–एटले वायुज जेनुं शरीर होय ते. जेमके हवा, पवन.

५–वनस्पतिकायना जीव–एटले वनस्पतिज जेनुं शरीर होय ते. जेमके झाड, वेला, फल, फूल, जडी वगेरे.

आ पांचे कायना जीव बादर (स्थूल) अने सूक्ष्मना भेदथी बे प्रकारना होय छे.

---

* ए पाच प्रकारना जीव अने त्रस जीव एने षट् (छ) कायना जीव कहे छे

बादरकायना जीव तेने कहे छे के जे आंखोथी जोवामां आवे छे अने सूक्ष्म तेने कहे छे के जे जोई शकाता नथी. सूक्ष्म जीव कोई वस्तुथी रोकाता पण नथी अने बीजी वस्तुने रोकता पण नथी.

-सवालो-

१—स्थावर जीव केटला प्रकारना होय छे ?

२—जे जीवोनुं शरीर हवा होय छे तेने शुं कहे छे ?

३—केरीनुं झाड, दराखनो वेलो, ગુલાબના फूल, લામડ નાં पांदडां, ए कया जीव छे?

४—मोती, रत्न, हीरा, पथ्थर, करां, ओस बादर जीव छे के सूक्ष्म ?

५—एक तळावमां कमलना फूल उपर भमरा गुंजारव करी रहेला छे तो बतावो के त्यां कयी कयी कायना जीव छे?

पाठ पांचमो.

पांच पाप.

पाप-पांच होय छे १ हिंसा, २ जूठुं, ३ चोरी, ४ कुशील, ५ परिग्रह.

१. हिंसा-प्रमाद (आळस)थी पोताना के पारकाना प्राणोनो घात करवो तेने अथवा मन दुखाववाने हिंसा कहे छे, आ पाप करनारने निर्दयी, हिंसक, घातकी कहे छे माटे-

जीवोंनी करुणा मन धार ।
ए सौ धर्मोमां छे सार ॥

२. जूठुं–जे वात के जे वस्तुने जेवी जोई होय अथवा अथवा जेम कही होय के जेम सांभळी होय तेने तेवी रीते न कहेवी, ते जुठुं छे. आ पाप करनारनें जूठों, दगाखोर, कहेवाय छे माटे–

जूठ वचन मुखपर नहि लाव (आण) ।
सच्च वचनपर राखज भाव ॥

३. चोरी– आप्या वगर कोईनी पडेली, मुकेली, भूली गएली अगर पडती वस्तुने लई लेवी अथवा लईने बीजा कोईनें आपवी ते चोरी छे. आ पाप करनारने चोर तस्कर कहेवाय छे, अने लोंको तेंने खराब कहे छे माटे–

मालिकनी आज्ञा विन कोय ।
वस्तु ले ते चोरी होय ॥
तेथी आज्ञा विन ना लहो ।
चोरीथी नित डरता रहो ॥

४. कुशलि–पारकी स्त्रीनी साथे विलास करवाने कुशील कहे छे, आ पाप करनार. व्याभिचारी, लुच्चा, दुराचारी कहे छें, अने लोंकमां ते खराब दृष्टिथी जोवाय छे माटे–

पर दाराथी स्नेह न करो ।
एनाथी तो दूरज रहो ॥

५. परिग्रह–जमीन, मकान, धन, धान्य, गाय, बळद, हाथी, घोडा, कपडां, वासण वगेरे वस्तुओ उपर मोह

राखवो अने एज संसारी वस्तुओनो संग्रह करवो तें परिग्रह छे. आ पाप करनारने लोभी अने कंजूस कहे छे, माटे-

धन धरादिमां मूर्च्छा तजो ।
एनो अति संग्रह ना करो ॥

सवालो-

१—पापनां नाम कहो अने तेमां सौथी मोटुं पाप कयुं छे ?

२—एक विद्यार्थी बीजा विद्यार्थीनी चोपडी वगर कहे घेर लई गयो तो, कहो के तेणे कयुं पाप कर्युं ?

३—एक छोकराने कपडांनो घणो शोक छे, दररोज नवां नवां कपडां करावे छे त्यारे कहोके तेने तमे शुं कहेशो ?

४—एक छोकराए बीजा छोकराने एक थप्पड मारी, मास्तरे ज्यारे तेने पूछयु के तें आने थप्पड मारी के ? तेणे ना कही त्यारे कहो के तेणे कयुं पाप कर्युं ?

५—हिंसापाप कोने कहेवाय छे, उदाहरण आपीने समझावो.

६—साचुं बोलवावाळो चोरी करी शके के नहि ?

७—जो कोई मनुष्य हिंसा करवानुं छोडी दे तो बतावो के हिंसानी साथे तेणे कयां कयां पाप छोडी दीधां ?

८—आ पांचे पापोथी उलटुं शुं शुं छे ?

९—एक आदमी आगळ जोइने चालतो हतो, तोपण तेना पग तळे एक कीडी मरी गई तो बतावो के तेने हिंसानुं पाप लाग्युं के नहि ?

पाठ छट्ठो।

कषाय.

कषाय-जे आत्माने कषे अर्थात् दुःख दे तेने कषाय कहे छे. एवा कषाय चार प्रकारना छे, १ क्रोध, २ मान, ३ माया, ४ लोभ.

१. क्रोध-रीसने कहे छे,

२. मान-अहंकारने कहे छे,

३. माया-छल कपट करवाने कहे छे एटले मनमां कंई, वचनमां कंई अने करे कंई बीजुंज.

४. लोभ-लालच अने तृष्णाने कहे छे.

आ चारे कषाय पापबंधनुं मूल कारण छे अने जीवने घणुंज दुःख देनार छे.

माटे क्रोध कदी नहि करो, मान कषाय न मनमां धरो;
माया मनवचतनथी हरो, लालचमां कदिए नहि पडो.

सवालो-

१. कषाय केटला छे ते नाम साथे कहो.

२. कषायें करवाथी तमारुं शुं नुकशान थाय छे ?

३. लालच अने अहंकारी माणसने कयो कयो कषाय होय छे ?

४. एक विद्यार्थी भणवा गणवामां घणो चतुर छे, ते बीजो विद्यार्थी के जे भणवा गणवामं नबळो छे तेने पूछ्या छतां पण मदद करतो नथी अने उलटो तेनी निंदा अने पोतानां

वखाण करे छे तो कहो के आम करवाथी तेने कया कषायनो बंध थाय छे ?

५. रीस चढाववाथी (गुस्सो करवाथी) हिंसा थाय छे के नहि ?

६. माया कोने कहे छे? मायाचारी जूठो होय छे के नहि ?

पाठ सातमो ।

गतिओ.

गति—जीवनी बदलाती अवस्थाने गति कहे छे. आ गति चार प्रकारनी छे. १. नरकगति, २. तिर्यंचगति, ३. मनुष्यगति, ४. देवगति.

१. नरकगति—आ पृथ्वी (जमीन)ना नीचे सात नरक छे, ते नरकोमां घणुं भारी दुःख छे, त्यां रहेनारा जीवोने रात दिवस दुःखज दुःख सहन करवुं पडे छे, एक क्षण मात्र पण सुख मळतुं नथी. आ नरकोमां ज्यारे माणस के पशु मरीने जन्म ले छे त्यारे तेने नरक गतिमां जन्म्यो एम कहे छे, आ गतिना जीव पंचेन्द्रिज होय छे;

२. तिर्यंचगति—स्थावर जीव, पशु, पक्षी कीडा, मंकोडा मगर मच्छ वगेरे जनवरोंने तिर्यंच कहे छे. ज्यारे कोई जीव मरीने आ गतिमां जन्म ले छे त्यारे तेने तिर्यंचगतिमां जन्म लीधो कहे छे. आ गतिमां पांचे इन्द्रियाना जीवो होय छे

मनुष्यगति–कोई पण जीव मरीने मनुष्यनुं शरीर धारण करे, तो तेने मनुष्यगतिमां जन्म लीधो छे एम कहे छे. मनुष्यगतिना जीवो पंचेंद्रिय होय छे.

४. देवगति–उपर कहेला त्रण प्रकारना जीवो सिवाय एक चोथी जातना जीवो होय छे, जेने अनेक प्रकारनी उत्तमोत्तम भोगउपभोगनी चीजो प्राप्त थाय छे अने तेओ रात दिवस सुखमां लीन रहे छे तेने देव कहे छे. ते देवोमां, मरीने जे कोई जन्म ले छे तो तेने देवगति प्राप्त थई छे एम कहे छे. आ गतिना जीव पंचेंद्रियज होय छे.

–सवालो–

१. गति केटली होय छे ते नाम साथे कहो ?

२. सौथी सारी गति कई छे अने सौथी खराब गति कई छे?

३. नरक केटलां छे ? ते जमीननी नीचे छे के ऊपर ? त्यां रहेवावाळाने दुःख थाय छे के सुख ?

४. नीचे लखेला जीवो कई गतिमां छे ?

बिलाडी, बळद, मांछलां, झाड, मनुष्य, घोडो, वांदरो, नोकर, स्त्री, छोकरो, कीडा, देव.

५. एक गाय मरीने मनुष्य थई, त्यारे ते पहेलां कई गतिमां हती अने हवे कई गतिमां गई ?

६. एक जीव नरकमांथी नीकळीने कूतरो थयो त्यारे बतावो के हाल ते सारो छे के पहेला सारो हतो ?

समाप्त.

उपयोगी शिखामणो.

१. भणवामां मन लगाडो.

२. मोटा पुरुषोने मान आपो.

३. नित्य साचुंज बोलो.

४. कह्या वगर कोईनी वस्तु लो नही.

५. कोईनुं पण मन दुखावो नहीं.

६. सर्वेनी साथे मीठां वचन बोलो.

७. शरीर हमेशां साफ राखो.

८. पाणी बेवडे गलणेथी गाळीने पीओ.

९. भाईबहेनो साथे हेत राखो.

१०. बधाने 'जी' कहीने बोलावो.

११. स्हवारमा उठीने प्रथम णमोकार मंत्र तथा स्तुति भणो.

१२. ब्रह्मचर्यव्रत पाळो.

१३. लालच कदि पण करो नहीं.

१४. मांस, मद्य अने दारुने कदि अडको पण नहि.

१५. रात्रिभोजन (रात्रे जमवुं) कदि पण करो नहि.